टिप्पणी

15

ठेस

(फणीश्वरनाथ 'रेणु')

आपने अपने आसपास ऐसे कलाकारों और कारीगरों को देखा होगा या उनके बारे में सुना होगा जो किसी समय बहुत मशहूर थे, लेकिन आज समय के बदलने के साथ उनकी कला और कारीगरी के प्रशंसक कम हो गए हैं। ऐसी स्थिति में इन कलाकारों और कारीगरों की पूछ समाज में धीरे-धीरे कम हो गई है। अपने हुनर को छोड़ चुके ये लोग आज जीवन-यापन की खोज में दर-दर भटकने के लिए मज़बूर हैं। ऐसे कारीगरों को लोग कामचोर समझते हैं और उनकी उपेक्षा करते हैं। लोगों की इस उपेक्षा से कई बार कारीगरों के दिल पर गहरी ठेस लगती है और वे इसे सह नहीं पाते।

यह कहानी सिरचन नाम के एक ऐसे ही कारीगर की है जिसे एक परिवार के दुत्कार से गहरी ठेस लगती है। इसके बावजूद वह इतना मानवीय है कि बिना दाम लिए अपनी कारीगरी से सारी चीज़ें बनाकर इसी परिवार की ससुराल जाती मानू को स्टेशन पर दे आता है। यह सिरचन कैसा कारीगर है, आइए जानें।

कहानीकार कारीगर के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हैं और यह भी चिंता व्यक्त करते हैं कि ऐसे कारीगरों की उपेक्षा हो रही है। दूसरी बात है कि ग्रामीण समाज के भेदभाव को प्रस्तुत करते हैं। गरीब वर्ग की उदात्त भावना को भी बखूबी प्रस्तुत किया गया है। उसमें संवेदनशीलता और करुणा का भाव विद्यमान है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- सिरचन के काम छोड़कर चले जाने के मनोवैज्ञानिक कारणों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- कलाकारों और कारीगरों के स्वभाव की मानवीय भावनाओं को समझ कर अभिव्यक्त कर सकेंगे;
- उपेक्षित समाज के प्रति सामान्य लोगों के व्यवहार पर अपना दृष्टिकोण व्यक्त कर सकेंगे;

टिप्पणी

- कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण कर सकेंगे;
- कहानी के विशेष शिल्प के महत्व को प्रतिपादित कर सकेंगे;
- कहानी की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

15.1 मूल पाठ

आइए, इस कहानी को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं। आपकी सहायता के लिए कहानी आए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए जा रहे हैं।

खेती-बारी के समय, गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं। इसलिए, खेत-खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को। क्या होगा, उसको बुला कर? दूसरे मजदूर खेत पहुँच कर एक-तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता दिखाई पड़ेगा- पगडंडी पर तौल-तौल कर पाँव रखता हुआ, धीरे-धीरे। मुफ्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है।

....आज सिरचन को मुफ़्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई। एक समय था, जबकि उसकी मड़ैया के पास बड़े-बड़े बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं। उसे लोग पूछते ही नहीं थे, उसकी खुशामद भी करते थे। '...अरे, सिरचन भाई! अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है सारे इलाके में। एक दिन भी समय निकाल कर चलो। कल बड़े भैया की चिट्ठी आई है शहर से- सिरचन से एक जोड़ा चिक बनवा कर भेज दो।'

मुझे याद है.... मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता, 'भोग क्या-क्या लगेगा?'

माँ हँस कर कहती, 'जा-जा, बेचारा मेरे काम में पूजा-भोग की बात नहीं उठता कभी।'

ब्राह्मणटोली के पंचानंद चौधरी के छोटे लड़के को एक बार मेरे सामने ही बेपानी कर दिया था सिरचन ने- ''तुम्हारी भाभी नाखून से खाँटकर तरकारी परोसती है। और इमली का रस साल कर कढ़ी तो हम कहार-कुम्हारों की घरवाली बनाती हैं। तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाई!''

इसलिए सिरचन को बुलाने से पहले मैं माँ को पूछ लेता....

सिरचन को देखते ही माँ हुलस कर कहती, ''आओ सिरचन! आज नेनू मथ रही थी, तो तुम्हारी याद आई। घी की डाड़ी (खखोरन) के साथ चूड़ा तुमको बहुत पसंद है न...! और बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है, उसकी ननद रूठी हुई है, मोथी के शीतलपाटी के लिए।''

सिरचन अपनी पनियायी जीभ को सँभाल कर हँसता- ''घी की सौंधी सुगंध सूँघ कर आ रहा हूँ, काकी! नहीं तो इस शादीब्याह के मौसम में दम मारने की भी छुट्टी कहाँ मिलती है?''

सिरचन जाति का कारीगर है। मैंने घंटों बैठकर उसके काम करने के ढंग को देखा है।

शब्दार्थ

बेगार - बिना मजदूरी के बलपूर्वक कराया जाने वाला काम
बेकार - निठल्ला, बेरोजगार
चटोर - खाने का लोभी
बेपानी - बेइज्जत
नेनू - मक्खन
मोथी की शीतलपाटी- खास तरह के घास की चटाई

टिप्पणी

शब्दार्थ

सुतली – रस्सी
मुंहजोर – मुँहफट, उदंड
बघारना – तड़का देना, छौंक लगाना
अधकपारी दर्द – आधे सिर का दर्द,
मूंज की रस्सी – एक खास तरह की घास की रस्सी
मुंगिया लड्डू – मूँग के लड्डू
गुड़ का सूखा ढेला – गुड की डली
कलेवा – नाश्ता, जलपान
चिउरा – धन को कूटकर तैयार किया गया एक खाद्य पदार्थ
नैहर – मायका
बतकुटी – बेवजह बात करना
गमकौआ – सुगंधित,
यतपरो नास्ति – अब और नहीं
हनहनाता – तेजी से
बेजा – अनुचित, जतन

ठेस : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

चित्र 15.1 : सिरचन

एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता। कुच्चियों को रँगने से लेकर सुतली सुलझाने में फिर पूरा दिन समाप्त. ... काम करते समय उसकी तन्मयता में जरा भी बाधा पड़ी कि गेंहुअन साँप की तरह फुफकार उठता- ''फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम! सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं।''

बिना मजदूरी के पेट-भर भात पर काम करने वाला कारीगर। दूध में कोई मिठाई न मिले, तो कोई बात नहीं, किंतु बात में जरा भी झाल वह नहीं बर्दाश्त कर सकता।

सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं.... तली-बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाई वाला दूध, इन सबका प्रबंध पहले कर लो, तब सिरचन को बुलाओ; दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा। खाने-पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई खत्म! काम अधूरा रख कर उठ खड़ा होगा- ''आज तो अब अधकपाली दर्द से माथा टनटना रहा है। थोड़ा-सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूँगा।''... 'किसी दिन'- माने कभी नहीं!

मोथी घास और पटरे की रंगीन शीतलपाटी, बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी-चुन्नी रखने के लिए मूँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पत्तों की छतरी-टोपी तथा इसी तरह के बहुत-से काम हैं, जिन्हें सिरचन के सिवा गाँव में और कोई नहीं जानता। यह दूसरी बात है कि अब गाँव में ऐसे कामों को बेकाम का काम समझते हैं लोग- बेकाम का काम, जिसकी मजदूरी में अनाज या पैसे देने की कोई जरूरत नहीं। पेट-भर खिला दो, काम पूरा होने पर एकाध पुराना-धुराना कपड़ा देकर विदा करो। वह कुछ भी नहीं बोलेगा।...

कुछ भी नहीं बोलेगा, ऐसी बात नहीं। सिरचन को बुलाने वाले जानते हैं, सिरचन बात करने में भी कारगर है।... महाजन टोले के भज्जू महाजन की बेटी सिरचन की बात सुनकर तिलमिला उठी थी- ''ठहरो! मैं माँ से जा कर कहती हूँ। इतनी बड़ी बात!''

''बड़ी बात ही है बिटिया! बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है। नहीं तो दो-दो पटेर की पाटियों का काम सिर्फ खेसारी का सत्तू खिलाकर कोई करवाए भला? यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी!'' सिरचन ने मुस्कुराकर जवाब दिया था।

उस बार मेरी सबसे छोटी बहन की विदाई होने वाली थी। पहली बार ससुराल जा रही थी मानू। मानू के दूल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को खत लिखकर चेतावनी दे दी है- ''मानू के साथ मिठाई की पतीली न आए, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो

शीतलपाटियों के बिना आएगी मानू तो...।'' भाभी ने हँसकर कहा, ''बैरंग वापस!'' इसलिए, एक सप्ताह पहले से ही सिरचन को बुलाकर काम पर तैनात करवा दिया था माँ ने- 'देख सिरचन! इस बार नई धोती दूँगी; असली मोहर छाप वाली धोती। मन लगाकर ऐसा काम करो कि देखनेवाले देखकर देखते ही रह जाएँ।''

चित्र 15.2 : सिरचन और मँझली भाभी

पान-जैसी पतली छुरी से बाँस की तीलियों और कमानियों को चिकनाता हुआ सिरचन अपने काम में लग गया। रंगीन सुतलियों से झब्बे डालकर वह चिक बुनने बैठा। डेढ़ हाथ की बिनाई देखकर ही लोग समझ गए कि इस बार एकदम नए फैशन की चीज बन रही है, जो पहले कभी नहीं बनी।

मँझली भाभी से नहीं रहा गया, परदे के आड़ से बोली, ''पहले ऐसा जानती कि मोहर छाप वाली धोती देने से ही अच्छी चीज बनती है तो भैया को खबर भेज देती।''

काम में व्यस्त सिरचन के कानों में बात पड़ गई। बोला, ''मोहर छापवाली धोती के साथ रेशमी कुरता देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती बहुरिया। मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है. ... मानू दीदी का दूल्हा अफसर आदमी है।''

मँझली भाभी का मुँह लटक गया। मेरे चाची ने फुसफुसाकर कहा, 'किससे बात करती है बहू? मोहर छापवाली धोती नहीं, मुँगिया-लड्डू। बेटी की विदाई के समय रोज़ मिठाई जो खाने को मिलेगी। देखती है न।''

दूसरे दिन चिक की पहली पाँति में सात तारे जगमगा उठे, सात रंग के। सतभैया तारा! सिरचन जब काम में मगन होता है तो उसकी जीभ ज़रा बाहर निकल आती है, होंठ पर। अपने काम में मगन सिरचन को खाने-पीने की सुध नहीं रहती। चिक में सुतली के फंदे डालकर उसने अपने पास पड़े सूप पर निगाह डाली- चिउरा और गुड़ का एक सूखा ढेला। मैंने लक्ष्य किया, सिरचन की नाक के पास दो रेखाएँ उभर आईं। मैं दौड़कर माँ के पास गया। ''माँ, आज सिरचन को कलेवा किसने दिया है, सिर्फ चिउरा और गुड़?''

माँ रसोईघर में अंदर पकवान आदि बनाने में व्यस्त थी। बोली, ''मैं अकेली कहाँ-कहाँ क्या-क्या देखूँ!.... अरी मँझली, सिरचन को बुँदिया क्यों नहीं देती?''

''बुँदिया मैं नहीं खाता, काकी!'' सिरचन के मुँह में चिउरा भरा हुआ था। गुड़ का ढेला सूप के किनारे पर पड़ा रहा, अछूता।

माँ की बोली सुनते ही मँझली भाभी की भौहें तन गईं। मुट्ठी भर बुँदिया सूप में फेंक कर चली गई।

टिप्पणी

सिरचन ने पानी पीकर कहा, ''मँझली बहूरानी अपने मैके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर बाँटती है क्या?''

बस, मँझली भाभी अपने कमरे में बैठकर रोने लगी। चाची ने माँ के पास जाकर लगाया– ''छोटी जाति के आदमी का मुँह भी छोटा होता है। मुँह लगाने से सिर पर चढ़ेगा ही।.... किसी के नैहर–ससुराल की बात क्यों करेगा वह?''

मँझली भाभी माँ की दुलारी बहू है। माँ तमककर बाहर आई– ''सिरचन, तुम काम करने आए हो, अपना काम करो। बहुओं से बतकुट्टी करने की क्या जरूरत? जिस चीज की जरूरत हो, मुझसे कहो।''

सिरचन का मुँह लाल हो गया। उसने कोई जवाब नहीं दिया। बाँस में टँगे हुए अधूरे चिक में फंदे डालने लगा।

मानू पान सजाकर बाहर बैठकखाने में भेज रही थी। चुपके से पान का एक बीड़ा सिरचन को देती हुई बोली, इधर–उधर देख कर– 'सिरचन दादा, काम–काज का घर! पाँच तरह के लोग पाँच किस्म की बात करेंगे। तुम किसी की बात पर कान मत दो।''

सिरचन ने मुस्कुराकर पान का बीड़ा मुँह में ले लिया। चाची अपने कमरे से निकल रही थी। सिरचन को पान खाते देखकर अवाक् हो गई। सिरचन ने चाची को अपनी ओर अचरज से घूरते देखकर कहा, ''छोटी चाची, जरा अपनी डिबिया का गमकौआ जर्दा तो खिलाना। बहुत दिन हुए...।''

चाची कई कारणों से जली–भुनी रहती थी, सिरचन से। गुस्सा उतारने का ऐसा मौका फिर नहीं मिल सकता। झनकती हुई बोली, ''मसखरी करता है? तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे। घर में भी पान और गमकौआ जर्दा खाते हो?.... चटोर कहीं के!'' मेरा कलेजा धड़क उठा... यत्परो नास्ति!

बस, सिरचन की उँगलियों में सुतली के फंदे पड़ गए। मानो, कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा पान को मुँह में घुलाता रहा। फिर, अचानक उठकर पिछवाड़े पीक थूक आया। अपनी छुरी, हँसिया वगैरह समेट–सँभालकर झोले में रखे। टँगी हुई अधूरी चिक पर एक निगाह डाली और हनहनाता हुआ आँगन के बाहर निकल गया।

चाची बड़बड़ाई– ''अरे बाप रे बाप! इतनी तेजी! कोई मुफ्त में तो काम नहीं करता। आठ रुपए में मोहर छापवाली धोती आती है''... इस मुँहझौंसे के न मुँह में लगाम है, न आँख में शील। पैसा खर्च करने पर सैकड़ों चिक मिलेंगी। बांतर टोली की औरतें सिर पर गट्ठर लेकर गली–गली मारी फिरती हैं।'

मानू कुछ नहीं बोली। चुपचाप अधूरी चिक को देखती रही... सातों तारे मंद पड़ गए।

माँ बोली, ''जाने दे बेटी! जी छोटा मत कर, मानू! मेले से खरीदकर भेज दूँगी।''

मानू को याद आया, विवाह में सिरचन के हाथ की शीतलपाटी दी थी माँ ने। ससुरालवालों

ने न जाने कितनी बार खोलकर दिखलाया था पटना और कलकत्ता के मेहमानों को। वह उठकर बड़ी भाभी के कमरे में चली गई।

मैं सिरचन को मनाने गया। देखा, एक फटी शीतलपाटी पर लेटकर वह कुछ सोच रहा है।

मुझे देखते ही बोला, 'बबुआ जी! अब नहीं! कान पकड़ता हूँ, अब नहीं। ....मोहर छापवाली धोती लेकर क्या करूँगा? कौन पहनेगा? ....ससुरी खुद मरी, बेटे-बेटियों को ले गई अपने साथ। बबुआजी, मेरी घरवाली जिंदा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता? यह शीतलपाटी उसी की बुनी हुई है। इस शीतलपाटी को छूकर कहता हूँ, अब यह काम नहीं करूँगा।... गाँव-भर में तुम्हारी हवेली में मेरी कदर होती थी।.... अब क्या?' मैं चुपचाप वापस लौट आया। समझ गया, कलाकार के दिल में ठेस लगी है। वह अब नहीं आ सकता।

बड़ी भाभी अधूरी चिक में रंगीन छींट की झालर लगाने लगी- ''यह भी बेजा नहीं दिखलाई पड़ता, क्यों मानू?'

मानू कुछ नहीं बोली।... बेचारी! किंतु, मैं चुप नहीं रह सका- ''चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाए इसमें भी!''

मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था।

स्टेशन पर सामान मिलाते समय देखा, मानू बड़े जतन से अधूरे चिक की मोड़ कर लिए जा रही है अपने साथ। मन-ही-मन सिरचन पर गुस्सा हो आया। चाची के सुर-में-सुर मिलाकर कोसने को जी हुआ!... कामचोर, चटोर!....

चित्र 15.3 : सिरचन उपहार देते हुए

गाड़ी आई। सामान चढ़ाकर मैं दरवाजा बंद कर रहा था कि प्लेटफॉर्म पर दौड़ते हुए सिरचन पर नजर पड़ी- ''बबुआजी!'' उसने दरवाजे के पास आकर पुकारा।

'क्या है?' मैंने खिड़की से गर्दन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा। सिरचन ने पीठ पर लदे हुए बोझ को उतारकर मेरी ओर देखा- ''दौड़ता आया हूँ।.... दरवाजा खोलिए! मानू दीदी कहाँ हैं? एक बार देखूँ!''

मैंने दरवाजा खोल दिया।

''सिरचन दादा!'' मानू इतना ही बोल सकी।

खिड़की के पास खड़े होकर सिरचन ने हकलाते हुए कहा, ''यह मेरी ओर से है। सब चीज है दीदी! शीतलपाटी, चिक और एक जोड़ी आसनी, कुश की।''

गाड़ी चल पड़ी।

टिप्पणी

मानू मोहर छापवाली धोती का दाम निकाल कर देने लगी। सिरचन ने जीभ को दाँत से काट कर, दोनों हाथ जोड़ दिए।

मानू फूट-फूट रो रही थी। मैं बंडल को खोल कर देखने लगा- ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, रंगीन सुतलियों के फंदों का ऐसा काम, पहली बार देख रहा था।

बोध प्रश्न 15.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ''मोहर छापवाली धोती के साथ रेशमी कुर्ता देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती बहुरिया'' - यह कथन किसका है–

   (क) मँझली भाभी का (ख) मानू का

   (ग) सिरचन का (घ) चाची का

2. सिरचन की बात सुनकर कौन तिलमिला उठा–

   (क) भज्जू महाजन की बेटी (ख) पंचानन चौधरी का छोटा लड़का

   (ग) बड़ी भाभी (घ) मानू के ससुराल वाले

3. सिरचन स्वयं को मानता है -

   (क) कामचोर (ख) मुँहजोर

   (ग) चटोर (घ) मुक्तखोर

15.2 आइए समझें

आइए, अब हम इस कहानी को समझने की कोशिश करते हैं। कहानी के मुख्यत: छह तत्त्व होते हैं - कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल और वातावरण एवं उद्देश्य और भाषा-शैली। हम इन तत्त्वों का ध्यान में रखते हुए इस कहानी का विवेचन करेंगे। कथावस्तु में मुख्य कथा या कहानी के विषय क्षेत्र की बात की जाती है। समय-समय पर उपस्थित होने वाले पात्रों को समझने का काम चरित्र-चित्रण के अंतर्गत किया जाता है। कहानी में पात्र केवल उपस्थित ही नहीं होते, बल्कि वे अपना व्यक्तित्व साथ लेकर आते हैं। संवाद कहानी के मुख्य अंग होते हैं। कहानी की भाषा-शैली के अंतर्गत भाषा एवं प्रस्तुति की शैली का अध्ययन किया जाता है अर्थात् कहानी की भाषा कैसी है? शब्द-चयन कैसा है? कहानी कहने का तरीका कैसा है? देशकाल एवं वातावरण में हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि कहानी में किन परिस्थितियों अर्थात किस समय और परिवेश की बात की गई है। उद्देश्य के अंतर्गत रचनाकार का लक्ष्य, उसकी दृष्टि और उसके संदेश का पता चलता है।

(क) कथावस्तु

कहानी पढ़कर आप जान चुके हैं कि यह कहानी किसी गाँव-देहात में कारीगरी का काम करने वाले सिरचन की है। सिरचन के हाथ की कारीगरी का उस पूरे इलाके में कोई जोड़ नहीं था। मोथी घास और पटेर की रंगीन शीतलपाटी हो या बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगी डोर के मोढ़े हो या भूसी चुन्नी रखने के लिए मुँज की रस्सी के बड़े-बड़े जाले या हलवाहों के लिए ताल के सूखे पत्तों की छतरी टोपी तथा इसी तरह के और बहुत से काम, इन्हें तैयार करने का काम सिरचन के सिवा गाँव में और कोई नहीं जानता था। लेखक का कथन है कि एक समय था जब सिरचन के घर पर लोगों की भीड़ लगी रहती थी। लोग इन चीज़ों के लिए सिरचन की खुशामद करते फिरते थे। लेकिन समय बदलने के साथ धीरे-धीरे इन चीज़ों की कद्र करने वालों की संख्या कम होती गई। सिरचन की कारीगरी को पहचानने वाले कम होते गए। कारीगरी के इन कामों को लोग बेकाम का काम समझने लगे। लोग पैसे देने की भी ज़रूरत नहीं समझते थे, बल्कि भरपेट खाना खिलाकर और एकाध पुराने कपड़े देकर ही इन चीज़ों को बनवाने लगे।

सिरचन कारीगर था। उसका मन कारीगरी के अलावा किसी दूसरी चीज़ में नहीं रमता था। खेतों में मज़दूरी करना तो उसे बिल्कुल नहीं भाता था। इसलिए लोग खेतों में मज़दूरी के लिए उसे नहीं बुलाते थे। उसके स्वभाव और हुनर को न समझ पाने के कारण लोग उसे कामचोर, मुफ़्तखोर और चटोर समझते थे, लेकिन वह ऐसा बिल्कुल नहीं था। वह अपनी कारीगरी का काम हमेशा ही मेहनत और मन लगाकर करता था। काम करते हुए उसका मन काम में ऐसे रम जाता था कि उसमें जरा कोई भी बाधा पड़ने पर वह तुरंत गुस्से से तुरंत लाल हो जाता था। वह साफ़ कहता था - ''सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं''। अर्थात् मुँह से कड़वा भले ही बोल दे लेकिन काम से जी चुराना वह नहीं जानता। उसकी यह बात बहुत से लोगों को अच्छी नहीं लगती थी। यह बात गाँव में हर कोई जानता था कि सिरचन स्वादिष्ट खाना खाने का जितना शौकीन था उतना ही स्वाभिमानी भी। अपनी उपेक्षा और अनादर वह सह नहीं पाता था। कहानी में ऐसे कई प्रसंग आए हैं, जहाँ सिरचन खाने को लेकर तीखा व्यंग्य करता है।

कहानी के शुरू में ही सिरचन ब्राह्मण टोला के पंचानन चौधरी के छोटे लड़के को इस बात के लिए खूब खरी-खोटी सुनाता है कि, ''तुम्हारी भाभी कढ़ी में इमली का रस डालती हैं और सब्जी नाखून से खूँटकर बहुत कम परोसती हैं।'' कहानी में सिरचन आगे एक जगह और महाजन टोली के भज्जू महाजन की बेटी से भी व्यंग्य में कहता है कि, ''सिर्फ खेसारी का सत्तू खिलाकर दो-दो पटेर की पाटियों का काम तुम्हारी माँ ही करा सकती है बबुनी।'' कथावाचक और उसकी माँ सिरचन के इस स्वभाव और व्यवहार को अच्छी तरह जानते हैं कि वह खाने-पीने का शौकीन है। इसलिए सिरचन को देखकर कथावाचक की माँ कहती है, ''आओ सिरचन! आज नैनू मथ रही थी, तो तुम्हारी याद आई। घी की डाड़ी के साथ चूड़ा तुमको बहुत पसंद है न!'' और सिरचन पनियायी जीभ को संभाल कर कहता, ''घी की सौंधी सूँघकर ही आ रहा हूँ काकी!''

टिप्पणी

ठेस : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

कथावाचक की माँ अपनी छोटी बेटी मानू के ससुराल वालों के लिए तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो शीतल पाटियाँ बनवाना चाहती थी इसलिए सिरचन को एक सप्ताह पहले ही बुलाकर काम पर लगा दिया। साथ ही लालच भी दिया कि इस बार नई धोती दूँगी, असल मोहर छाप वाली। सिरचन अपने काम में खूब मन लगाकर जुट जाता है। उसे किसी दूसरी चीज़ की सुध नहीं रहती। लेकिन जैसे ही उसकी निगाह पास पड़े सूप पर पड़ती है तो उसमें रखे चिउरा और गुड़ के एक सूखे ढेले को देखकर वह मुँह बना लेता है। सिरचन को दिए गए इस कलेवे को देखकर कथावाचक बेचैन और परेशान होकर जब माँ से पूछता है तो माँ अपने को इस घटना से अनजान बताती हुई मँझली बहू को थोड़ी बूँदिया सिरचन को देने के लिए कह कर दूसरे काम में व्यस्त हो जाती है। सिरचन पर पहले से चिढ़ी हुई मँझली बहू जब एक मुट्ठी बुनिया सिरचन के सामने रखें सूप में फेंक कर जैसे ही जाती है, सिरचन व्यंग्य करते हुए कहता है – ''मँझली बहूरानी अपने मायके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर बाँटती हैं क्या।''

इस व्यंग्य से आहत मँझली बहू अपने कमरे में जाकर रोने लगती है। इस घटना से भड़की चाची सिरचन की शिकायत जब कथावाचक की माँ से करती है तो बात और बढ़ जाती है। काम में व्यस्त कथावाचक की माँ गुस्से में तमतमाए बाहर आकर सिरचन को बहुत बुरा-भला सुना जाती है। सिरचन को बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि उसके साथ ऐसा व्यवहार होगा। वह अवाक रह जाता है यहाँ दो बातें स्पष्ट होती हैं। पहली बात यह है कि मँझली बहूरानी का सिरचन के प्रति व्यवहार उचित नहीं है। और दूसरी बात यह है कि सिरचन ऐसे व्यवहार से आहत होता है। क्या आपको भी ऐसा व्यवहार बुरा नहीं लगेगा? उसका चेहरा लाल हो जाता है। इसी बीच मानू पान सजाकर बैठकखाने में भेज रही होती है, कि उसकी नज़र सिरचन पर पड़ती है और पान का एक बीड़ा वह चुपके से सिरचन की ओर बढ़ा देती है। सिरचन पान का बीड़ा मुँह में ले, सामने से आती हुई छोटी चाची को देखकर जब कहता – ''छोटी चाची जरा अपनी डिबिया का गमकौआ जर्दा तो खिलाना। बहुत दिन हुए....।'' तो सिरचन पर पहले से ही चिढ़ी हुई चाची उसे जलील करते हुए कठोर बातें कहती हैं ''तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे। घर में भी पान और गमकौआ जर्दा खाते हो ? चटोर कहीं के।'' चाची की इस बात से सिरचन को बहुत गहरा ठेस लगता है और वह काम छोड़कर चला जाता है- कथावाचक सिरचन को उसके घर जाकर मनाने का बहुत प्रयास करता है, लेकिन सिरचन फिर से आकर काम पूरा करने के लिए किसी शर्त पर तैयार नहीं होता है।

इसी बीच मानू की विदाई का दिन आ जाता है- मानू दुखी मन से आधा-अधूरा बना चिक अपने साथ ले लेती है। इस अधूरे बने चिक को देखकर कथावाचक का मन सिरचन के प्रति कड़वाहट से भर जाता है। कथावाचक मानू के साथ ससुराल जाने के लिए जब गाड़ी पर चढ़ जाता है तो उसकी नजर प्लेटफॉर्म पर दौड़ते सिरचन पर पड़ती है। वह देखता है कि सिरचन पीठ पर शीतलपाटी, चिक, एक जोड़ी असनी लादे दौड़ा चला आ रहा है। सभी सामान गाड़ी के अंदर चढ़ाकर सिरचन रेल की खिड़की के पास खड़े होकर मानू से कहता है कि यह मेरी ओर से है- और मानू जब मोहर छाप वाली धोती का दाम निकाल कर सिरचन को देने लगती है तो सिरचन जीभ को दाँत से काटकर हाथ जोड़ लेता है जैसे कह रहा हो यह तो मैं अपने मन से दे रहा हूँ, इसकी कोई कीमत नहीं।

पाठगत प्रश्न 15.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सिरचन इनमें से क्या नहीं बनाता था–

   (क) चिक (ख) असनी (ग) दरी (घ) शीतलपाटी

2. सिरचन को किस बात पर ठेस लगती है–

   (क) इमली से बनी कढ़ी देने से (ख) खेसारी का सत्तू खिलाने से

   (ग) पूरा मेहनताना नहीं (घ) चटोर कहने से

3. सिरचन उपहार में क्या लेकर आता है–

   (क) शीतलपाटी (ख) मोहरदाय वाली धोती

   (ग) अधूरा बना चिक (घ) गमकौआ जर्दा

क्रियाकलाप 15.1

चाची की कड़वी बातें सुनकर सिरचन अपना काम अधूरा छोड़कर चला जाता है और कथावाचक के मनाने पर भी वापस लौटकर नहीं आता। सिरचन का यह व्यवहार आपको कैसा लगा? सिरचन की जगह आप होते तो क्या करते? अपने शब्दों में अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

(ख) पात्र और चरित्र-चित्रण

आइए, अब इस कहानी के प्रमुख पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं को समझने का प्रयास करते हैं।

सिरचन

कहानी का मुख्य पात्र सिरचन है जिसमें अनेक गुण हैं। आइए, उन पर विचार करते हैं।

कुशल कारीगर

सिरचन कुशल कारीगर है। कारीगरी में ही उसका मन अधिक रमता है इसलिए कारीगरी के काम से अलग खेतों में श्रम करने के लिए जब कोई उसे बुलाता है तो सिरचन लापरवाही दिखाता है और काम पर देर से पहुँचता है। इसलिए लोग सिरचन को खेत पर मज़दूरी के लिए नहीं बुलाते हैं। और लोग उसे कामचोर, मुफ़्तखोर और चटोर समझते हैं। आज सिरचन को कोई जो चाहे कह ले, लेकिन एक समय था जब सिरचन इलाके का सबसे कुशल कारीगर था। उसके हाथों में कारीगरी का ऐसा गुण था कि बड़े-बड़े बाबू लोगों की सवारियाँ उसके मड़ैया

टिप्पणी

के पास बँधी रहती थी। लोग उसकी खुशामद करते थे। शहर में रहनेवाले लोग भी उसके हाथ की बनी चीज़ें पाने के लिए चिट्ठियाँ लिखते थे- ''सिरचन से एक जोड़ा चिक बनवा कर भेज दो।''

खाने-पीने का शौकीन

सिरचन को स्वादिष्ट चीज़ें खाने-पीने में रुचि थी। कथावाचक को भी जब सिरचन को बुलाना होता तो पहले ही माँ से पूछ लेता कि भोग क्या-क्या लगेगा? लोग इसी कारण सिरचन को चटोर समझते थे। सिरचन के बारे में लोगों की यह धारणा थी कि ''बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाईवाला दूध, इन सबका प्रबंध पहले कर लो, तब सिरचन को बुलाओ, वह दुम हिलाता हुआ हाज़िर हो जाएगा। खाने-पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई खत्म।''

खाने-पीने में कमी होने पर सिरचन नाराज हो जाता था और शिकायत भी करता था। एक बार खाने में सब्जी बहुत कम देने और इमली के रसवाली कढ़ी परोसने पर, ब्राह्मण टोली के पंचानन चौधरी के लड़के को सिरचन ने बेइज़्ज़त कर दिया था। इसी तरह एक बार खेसारी का सत्तू खिलाकर काम कराने पर सिरचन ने महाजन टोले के भज्जू महाजन की बेटी से भी हँसते-हँसते उसके माँ की शिकायत की थी।

कथावाचक की माँ सिरचन की इस कमज़ोरी को जानती थी। इसीलिए सिरचन को देखकर वह कहती है, ''आओ सिरचन, आज नेनु मथ रही थी तो तुम्हारी याद आई। घी की डाड़ी के साथ चूड़ा तुमको बहुत पसंद है न!'' और तब सिरचन अपनी पनियायी जीभ को संभाल कर कहता - ''घी की सोंधी सुगंध सूँघकर ही आ रहा हूँ काकी।''

काम के प्रति ईमानदार

सिरचन काम के प्रति बहुत ईमानदार था। वह अपना काम बहुत मेहनत और ईमानदारी से करता था। मोथी और पटेर को हाथ में लेकर वह बड़े जतन से उसकी कूची बनाता। फिर कूचियों को रंगने से लेकर सुतली सजाने तक की पूरी प्रक्रिया में वह पूरे मन से लगा रहता। सिरचन अपना मन काम में ऐसे लगाता कि उसमें जरा-सी भी बाधा आने पर गुस्से से तमतमा जाता। वह कहता था कि 'सिरचन मुँहजोर है, कामचोर नहीं।'

स्वाभिमानी

सिरचन में स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा था। किसी की कठोर बातें उसे बिल्कुल सहन नहीं होती थीं। उसे आत्मसम्मान से अधिक मूल्यवान कुछ भी नहीं लगता था। इसीलिए लेखक का कथन है- ''दूध में कोई मिठाई न मिले, तो कोई बात नहीं, किंतु बात में जरा-भी झाल वह नहीं बर्दाश्त कर सकता।''

कहानी के अंतिम हिस्से में सिरचन को कई बार कठोर बातें सुनने को मिलती हैं और उसका

आत्मसम्मान आहत होता है। सिरचन के स्वाभिमान को पहली बार ठेस तब लगती है जब मँझली बहू मुट्ठी भर बुनिया सूप में फेंककर चली जाती है। दूसरी बार ठेस तब लगती है जब कथावाचक की माँ गुस्से में सिरचन से कहती है, ''अपना काम करो, बहुओं से बत-कुट्टी करने की क्या जरूरत?'' यह सुनकर सिरचन का मुँह लाल हो जाता है। लेकिन सिरचन के आत्मसम्मान को सबसे बड़ा धक्का तब लगता है जब वह चाची से अपनी डिबिया का गमकौआ जर्दा खिलाने के लिए कहता है और जवाब में चाची यह कहती है कि, ''तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे, घर में भी पान और गमकौआ जर्दा खाते हो ? चटोर कहीं के।'' सिरचन दिल पर लगी इस ठेस को नहीं सह पाता है और अपने सामान को समेटकर काम छोड़कर उठ जाता है।

संवेदनशील

सिरचन में संवेदनशीलता का स्तर बहुत ऊँचा है। वह जानता है कि कब बोलना चाहिए और कब चुप रह जाना चाहिए। चाची की चुभने वाली तीखी बातों को सुनकर उसे गहरी ठेस तो पहुँचती है लेकिन वह अपमान का घूँट पीकर चुप रह जाता है। वह अपनी जुबान नहीं खोलता। वह अच्छी तरह जानता है कि जिस विषम सामाजिक और आर्थिक स्थिति में है, उसमें चुप रहने में ही भलाई है। भरपेट खाने पर काम करने वाला सिरचन जानता था कि वह किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, इसलिए वह चुपचाप काम छोड़कर चला जाता है और यही उसका प्रतिरोध था।

मानू के परिवार से गहरी ठेस लगने के बावजूद सिरचन के मन में मानू के प्रति मार्मिक संवेदना और प्रेम है। इसीलिए अंत में बिना किसी को खबर किए सिरचन ससुराल जाती मानू के लिए उसकी पसंद की चीज़ें बनाकर उसे देने स्टेशन पर जाता है। मानू सिरचन की लाई चीज़ों और सिरचन को देख फूट-फूटकर रोने लगती है। यही नहीं मानू जब सिरचन को इन चीज़ों के बदले मोहर छाप धोती की कीमत देने लगती है तो सिरचन दाँत से जीभ काट हाथ जोड़ लेता है। दरअसल संकेत से वह कहना चाहता है कि ये चीज़ें मेरी तरफ से तुम्हारे लिए भेंट हैं, इन्हें मैंने तुम्हारे प्रति स्नेह से बनाया है। इसकी कीमत लेकर मैं अपने स्नेह को कम नहीं कर सकता। यहाँ हम सिरचन की संवेदनशीलता, आत्मीयता, स्नेह और स्वाभिमान का उदत्त रूप देखते हैं।

वाचक

कहानी में दूसरा महत्वपूर्ण पात्र वाचक है। वाचक सिरचन के स्वभाव, व्यवहार और कारीगरी में उसकी कुशलता को अच्छी तरह पहचानता है। वह यह भी जानता है कि सिरचन खाने-पीने का शौकीन है, इसीलिए जब सिरचन को कलेवे में दिया गया चिउरा और गुड़ का सूखा ढेला देखता है तो वह घबराकर माँ से जाकर पूछता है कि आज सिरचन को कलेवे में सिर्फ़ चिउरा और गुड़ किसने दिया है? कथावाचक सिरचन के प्रति संवेदनशील है और वह जानता है कि कौन-सी बात सिरचन को बुरी लग सकती है? इसलिए वह कोई ऐसी बात नहीं होने देना चाहता है जिससे बात बिगड़ जाए। लेकिन चाहने से क्या होता है? चाची से गमकौआ जर्दा माँगने पर चाची सिरचन को अपमानित करते हुए जिस कठोरता से जवाब देती है उससे

टिप्पणी

कथावाचक का कलेजा धड़क उठता है। वह जान जाता है इससे बड़ी बात और कुछ नहीं हो सकती है। कथावाचक सिरचन के दिल पर लगी ठेस को भली-भाँति जानता था। इसलिए उसे मनाने के लिए उसके घर पहुँच जाता है। लेकिन सिरचन की करुणा से भरी बातें सुनकर उसे लगता है कलाकार के दिल में ठेस लगी है, वह नहीं आ सकता। कथावाचक लौट आता है।

कथावाचक अपनी बहन मानू के प्रति भी बहुत संवेदनशील है। मानू के प्रति स्नेह के कारण ही वह सिरचन को मनाने के लिए उसके घर जाता है। वह अपने परिवार के सदस्यों के स्वभाव को भी पहचानता है। वह जानता है कि चाची और मँझली भाभी का व्यवहार श्रम करने वालों के प्रति कठोर, भावशून्य और घृणा से भरा हुआ है। इसीलिए जब बड़ी भाभी अधूरी चिक में रंगीन छींट का झालर लगाने लगती हैं तो इसे देखकर वह यह कहना नहीं भूलता कि कहीं चाची और मँझली भाभी की नज़र इसमें भी न लग जाए।

इसके साथ ही उसके चरित्र में कुछ मानवीय कमज़ोरियाँ भी हमें दिखाई देती हैं। वह जब अपनी बहन मानू को ससुराल छोड़ने जाता है तो आधी अधूरी चिक को देखकर उसे मन-ही-मन सिरचन पर गुस्सा आ जाता है। उसे चाची की तरह ही कोसने का मन करता है। इससे पता चलता है कि कहानी में रेणु ने जिन चरित्रों का निर्माण किया है वे यथार्थ हैं। उनके मन में उठने वाली भावनाएँ स्वाभाविक हैं।

सिरचन इस कहानी का मुख्य पात्र है। पूरी कहानी उसी के इर्द-गिर्द घूमती है। इस कहानी में छोटी चाची, मँझली भाभी, बड़ी भाभी, मानू और कथावाचक की माँ कहानी को आगे बढ़ाने में सहायक हैं। ऐसे पात्रों को गौण पात्र कहते हैं। इन गौण पात्रों में मँझली बहू और छोटी चाची के बारे में आपने ज़रूर विचार किया होगा। ये दोनों स्त्री पात्र हैं। दोनों में एक समानता यह है कि दोनों आत्मकेंद्रित और संवेदनहीन हैं। इसका प्रमाण मँझली बहू द्वारा माँ के कहने पर एक मुट्टी बुंदिया सूप में फेंककर देने के व्यवहार में देख सकते हैं। इसी प्रकार छोटी चाची की संवेदनहीनता वहाँ दिखाई देती है जब गमकौआ जर्दा माँगने पर सिरचन को कठोर शब्दों में कहती है, "तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे, घर में भी पान और गमकौआ जर्दा खाते हो?" इन दोनों के अतिरिक्त मानू और कथावाचक की माँ सिरचन के प्रति सम्मान और आदर का भाव रखते हैं। मानू तो सिरचन को आदर देते हुए पान भी खिलाती है। और कथावाचक की माँ तो सिरचन के प्रति आरंभ से ही बहुत आदर और स्नेह का भाव प्रदर्शित करती दिखाई देती है।

पाठगत प्रश्न 15.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सिरचन नहीं है-

(क) संवेदनशील (ख) स्वाभिमानी

(ग) कुशल कारीगर (घ) कामचोर

टिप्पणी

2. सिरचन के प्रति कौन संवेदनशील नहीं था–

(क) छोटी चाची (ख) कथावाचक

(ग) मानू (घ) कथावाचिक की माँ

3. किस बात पर वाचक को सिरचन पर गुस्सा आता है–

(क) अधूरा काम करने पर (ख) सुंदर चिक माँगने पर

(ग) अधूरी चिक को देखकर (घ) गमकौआ जर्दा माँगने पर

संवाद-योजना

पात्रों की बातचीत को संवाद कहा जाता है। संवाद कहानी के घटनाक्रम को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। संवाद से ही हम कहानी में आए चरित्रों के व्यक्तित्व की विशेषताएँ जान पाते हैं। संवादों से ही कहानी में नई-नई घटनाएँ घटती हैं और कहानी में नाटकीयता उत्पन्न होती है।

'ठेस' कहानी में हम आरंभ से ही संवादों को देख सकते हैं। कथावाचक ने कहानी सुनाते हुए, जहाँ आवश्यक है, वहाँ संवाद की शैली में अपनी बात स्पष्ट की है। कहानी में आए आरंभिक संवाद इस बात का संकेत करते हैं कि सिरचन खाने-पीने का शौकीन है। अच्छा स्वाद उसकी कमज़ोरी है। इसीलिए सिरचन को काम पर बुलाने से पहले कथावाचक माँ से पूछता है, ''भोग क्या-क्या लगेगा?'' माँ हँसकर कहती है ''जा-जा, बेचारा मेरे काम में पूजा भोग की बात नहीं उठाता कभी।'' साथ ही यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि कथावाचक के घर काम करने के लिए सिरचन उत्साह से आता है।

वैसे कहानी में ज़्यादातर तीखे और व्यंग्यपूर्ण संवाद आरंभ से अंत तक या सिरचन के हैं। कहानी के आरंभ में ही खाने के स्वाद का शौकीन सिरचन खाने की शिकायत करता है, ''तुम्हारी भाभी नाखून से खोंटकर तरकारी परोसती है। और इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम कहार-कुम्हारों की घरवाली बनाती हैं; तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाई!'' खाने की शिकायत वह एक जगह और करता है, ''बड़ी बात ही है बिटिया! बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है। नहीं तो दो-दो पटेर की पाटियों का काम खेसारी का सत्तू खिलाकर तुम्हारी माँ ही करा सकती है बबुनी।'' खाने-पीने में कमी सिरचन के लिए असहनीय हो जाती है। कथावाचक के घर भी खाने के लिए आए चिउरा और गुड़ का सूखा ढेला देखकर अनिच्छा से उसके नाक के पास दो रेखाएँ उभर आती हैं। और कथावाचक की माँ के बुंदिया देने पर स्पष्ट कह देता है, ''बुंदिया मैं नहीं खाता काकी।'' और जब मँझली बहू एक मुट्ठी बुनिया सूप में फेंक जाती है तो सिरचन व्यंग्य करते हुए कहता है ''मँझली बहुरानी अपने मायके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर बाँटती है क्या?'' कहानी में आगे पान खाते हुए छोटी चाची से कहता है, ''छोटी चाची, जरा अपनी डिबिया का जर्दा तो खिलाना, बहुत दिन हुए।''

टिप्पणी

सिरचन के इन संवादों से साफ पता चलता है कि वह गरीब है और अच्छा भोजन ही उसके लिए सबकुछ है। कथावाचक की माँ जब सिरचन से कहती है,'' आओ सिरचन! आज नेनू मथ रही थी तो तुम्हारी याद आई तो सिरचन प्रसन्न हो जाता है और कहता है, ''घी की सोंधी सुगंध सूँघकर कर ही आ रहा हूँ काकी।'' और कहानी के अंत में उसका संवाद उल्लेखनीय है। वह कहता है, ''दौड़ता आया हूँ। दरवाजा खोलिए। मानू दीदी कहां है ? एक बार देखूँ!'' और इसके बाद वह कहता है, ''यह मेरी ओर से है। सब चीज है दीदी। शीतलपाटी, चिक और एक जोड़ी आसनी कुश की।'' उसके इन संवादों से हम उसके व्यक्तित्व और चरित्र की कई विशेषताओं को जान पाते हैं। कहानी में आए उसके इस अंतिम संवाद से पाठक का हृदय उसके प्रति आदर और श्रद्धा से भर उठता है।

कहानी में चाची के संवाद बहुत तीखे हैं। सिरचन की शिकायत करते हुए वह कहती हैं, ''छोटी जात के आदमी का मुँह भी छोटा होता है, मुँह लगाने से सिर पर चढ़ेगा ही।'' सिरचन जब काम छोड़ कर जाने लगता है तो चाची कहती है,'' अरे बाप रे बाप! इतनी तेजी! कोई मुफ़्त में तो काम नहीं करता। 8 रुपये में मोहर छाप वाली धोती आती है। इस मुँहझौसे के न मुँह में लगाम है न आँख में शील। पैसा खर्च करने पर सैकड़ों चीकें मिलेंगी।'' चाची के इन संवादों से चाची के चरित्र की विशेषताएँ उभर कर सामने आ जाती हैं। हमें यह पता चलता है कि चाची श्रम करने वालों के प्रति समानुभूति का भाव नहीं रखती हैं। वह उन्हें छोटा और हीनतर समझती हैं। उनके प्रति चाची के मन में कोई आदर और संवेदना का भाव नहीं है।

सिरचन को चाची की बातों से जो ठेस लगती है उससे वह टूट जाता है, ''बबुआ जी! अब नहीं। कान पकड़ता हूँ अब नहीं। मोहर छाप वाली धोती लेकर क्या करूँगा? कौन पहनेगा? ससुरी खुद मरी, बेटे-बेटियों को ले गई अपने साथ। बाबू जी मेरी घरवाली जिंदा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता? यह शीतलपाटी उसी की है। इस शीतलपाटी को छूकर कहता हूँ, अब यह काम नहीं करूँगा। गाँव भर में तुम्हारी हवेली में मेरी कदर होती थी, अब क्या?'' सिरचन के इसी संवाद में पूरी कहानी का मर्म छुपा हुआ है। इस संवाद से पता चलता है कि पूरे गाँव में अगर कहीं सिरचन का सम्मान था तो कथावाचक की हवेली में। लेकिन जब वहाँ भी उसे दुत्कार मिलती है, उसका अपमान होता है तो उसे गहरी ठेस लगती है और वह अपने कारीगरी को ही हमेशा के लिए छोड़ देने का निर्णय ले लेता है। लेकिन कहानी का अंत एकदम नाटकीय ढंग से होता है। अंत के संवादों में गहरी मार्मिकता दिखाई देती है।

(घ) देशकाल और वातावरण

देशकाल और वातावरण के अंतर्गत इस बात पर विचार किया जाता है कि कहानी में कैसा समाज आया है और उस समाज का कैसा परिवेश है? 'ठेस' कहानी के देशकाल में ग्रामीण समाज है जिसमें रहने वाले किसान हैं, मज़दूर हैं, कारीगर हैं और ऐसे उच्चवर्गीय समृद्ध लोग भी हैं जो तथाकथित ऊँची जाति के हैं। कथावाचक का परिवार समृद्ध और संभ्रांत है। परिवार में बहुत से सदस्य हैं जिससे पता चलता है कि यह संयुक्त परिवार है। कथा का मुख्य चरित्र सिरचन निम्नवर्ग का कारीगर है जिसका संबंध किसी दलित समाज से है। कथावाचक ने कहानी में गाँव के परिवेश को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। कहानी में आए ब्राह्मण टोला

और महाजन टोला के प्रसंग से यह भी स्पष्ट होता है कि गाँव छोटे-छोटे कई टोलों में विभाजित है। इससे गाँव का परिवेश और स्पष्टता के साथ उभरता है।

कहानी के आरंभ में ही गाँव और किसानों के साथ सिरचन के नाम का उल्लेख करके कहानीकार ने कहानी के परिवेश और उसकी स्थानिकता का परिचय दिया है। गाँव के समाज में एक कारीगर की जिस तरह उपेक्षा की जाती है और उसके प्रति अपमानजनक व्यवहार किया जाता है उससे भी कहानी के सामाजिक परिवेश का पता चलता है। कहानी के अंत में हम देखते हैं कि जब कथावाचक सिरचन को मनाने के लिए उसके घर पहुँचता है तो वह एक फटी हुई शीतलपाटी पर चुपचाप लेटा हुआ मिलता है। इससे हम गाँव में रहने वाले एक कारीगर के घर की दशा और दरिद्रता का अनुमान लगा सकते हैं। कहानी के सामाजिक परिवेश को हम इस बात से भी समझ सकते हैं कि पूरे गाँव में लोग सिरचन से चीज़ें तो बनवाना चाहते हैं लेकिन उसे खाना देते वक्त उसमें कमी कर देते हैं। सिरचन के साथ यह व्यवहार लोग संभवत: इसलिए करते हैं कि वह गरीब है और दलित समाज का है। इसकी पुष्टि चाची के संवाद से भी होती है जब वह कहती है, ''छोटी जात के आदमी का मुँह भी छोटा होता है'' – इस वाक्य से हम निम्नवर्ग के प्रति उच्चवर्ग की मानसिकता को भी जान सकते हैं।

(ङ) कहानी का उद्देश्य

आप यह तो समझ ही गए होंगे कि इस कहानी का उद्देश्य क्या है, अर्थात् लेखक कहना क्या चाहता है। इस कहानी में हमें सिरचन के व्यक्तित्व ने सबसे अधिक प्रभावित किया। उसके बाद वाचक ने। वही तो सिरचन की कथा बता रहा है। वाचक हमें यह अनुभव कराता है कि गावों में ऊँच-नीच का भेद-भाव कितना गहरा है। सिरचन दलित जाति का एक गरीब कारीगर है। वाचक के परिवर की मझली बहू की व्यंग्यपूर्ण बातें और उपेक्षापूर्ण व्यवहार सिरन को उसके छोटे होने का कड़वा एहसास कराती हैं। इससे सिरचन के मन पर गहरी चोट लगती है। लेखक ने इसी को 'ठेस लगना' कहा है। समाज में समृद्ध लोग का व्यवहार गरीब और मामूली लोगों के प्रति अक्सर भेद-भावपूर्ण और उपेक्षा से भरा होता है। हमें ऐसा व्यवहार बुरा लगता है। सिरचन के साथ मँझली बहू के उपेक्षापूर्ण व्यवहार का हमें बुरा लगना- यही तो इस कहानी का उद्देश्य है। इस कहानी में सिरचन का बीच में ही काम छोड़कर अपने घर लौट जाना और वाचक के बुलाने पर लौटकर न आना महत्वपूर्ण है। यह हमें इस बात का अनुभव कराता है कि मामूली और गरीब दिखने वाले कलाकारों-कारीगरों के प्रति हमें हमेशा उचित आदर के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। उन्हें अपने जैसा मनुष्य समझना चाहिए। तभी हम उनकी कला का भी सम्मान कर सकेंगे और एक समतामूलक और सौहार्दपूर्ण समाज बनाने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।

भाषा और शैली

आइए, अब इस कहानी की भाषा की विशेषताओं को समझने का प्रयास करें। कहानी की भाषा खड़ी बोली हिंदी है। कहानी की पृष्ठभूमि में बिहार का कोई गाँव होने के कारण भाषा

टिप्पणी

में कहीं-कहीं देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है जो कहानी की विषयवस्तु के अनुकूल है; ऐसे शब्दों में– खुरपी, खूँटकर, परोसती, नेनू, तरकारी, अधकपाली, टनटनाटी, बबुनी, बबुआ जी, पतीली, सूप, चिउरा, ढेला, गमकौवा, बतकुट्टी, दुलारी, शीतलपाटी, सुतली, कूची, झाल, मोथी, पटेर आदि हैं। ये शब्द गाँव में बोलचाल की भाषा के सामान्य शब्द हैं जिनका प्रयोग उस क्षेत्र के लोग सहज ढंग से करते हैं। इन देशज शब्दों के अतिरिक्त कहानी में ऐसे शब्द भी आए हैं जिन्हें तत्सम और तद्भव शब्द कहते हैं।

कहानी की भाषा कहानी के चरित्रों के व्यक्तित्व और स्वभाव के अनुकूल है। कहानी की भाषा में कई जगह बहुत तीखा व्यंग्य है। यह व्यंग्य सिरचन और चाची के संवादों में सबसे अधिक है। सिरचन के संवादों में व्यंग्य के कई उदाहरण देखे जा सकते हैं; जैसे– ''तुम्हारी भाभी नाखून से खाँटकर तरकारी परोसती है'', ''बुंदिया मैं नहीं खाता काकी। अपने मायके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर बाँटती है।'' इसी तरह चाची के संवादों में भी तीखा व्यंग्य है; उदाहरण– ''घर में भी पान और गम कौवा जर्दा खाते हो।'' अथवा ''इस मुँहझौसे के न मुँह में लगाम है न आँख में सील।''

कहानी की भाषा में मुहावरों का भी बहुत सटीक प्रयोग किया गया है; जैसे– तौल-तौल कर पाँव रखना, पूजा भोग की बात, बेपानी कर देना, पनियायी जीभ, साँप की तरह फुँफकारना, बतकुट्टी करना, हनहनाता हुआ, बढ़ी हुई जीभ, मुँह में लगाम, आँखों में सील आदि अनेक मुहावरों का प्रयोग हुआ है।

पाठगत प्रश्न 15.3

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'ठेस' कहानी की भाषा में शामिल नहीं है–

   (क) व्यंग्य (ख) देशजता

   (ग) मुहावरों का प्रयोग (घ) अलंकारों का प्रयोग

2. इसमें किस टोले का उल्लेख किया गया है–

   (क) कुम्हार टोला (ख) महाजन टोला

   (ग) समृद्ध टोला (घ) संयुक्त टोला

3. सिरचन किस वर्ग से जुड़ा है–

   (क) मज़दूर (ख) कारीगर

   (ग) किसान (घ) शिक्षक

क्रियाकलाप 15.2

1. अपने आसपास के किसी हस्तशिल्प के बारे में जानकारी प्राप्त कर उसके संबंध में 100 शब्दों में विवरण प्रस्तुत कीजिए।
2. किसी कारीगर से बातचीत करते समय आप कौन-कौन से सवाल पूछे सकते हैं। किन्हीं दस प्रश्नों को लिखिए।

15.3 आपने क्या सीखा : चित्र प्रस्तुति

कहानी के तत्त्व

कथावस्तु	चरित्र-चित्रण	उद्देश्य	देशकाल तथा वातावरण	कथोपकथन संवाद	भाषा-शैली	मानव मूल्य	रचनाकार
• गाँव का परिवेश • कथावाचक के परिवार का दृश्य • रेलवे-स्टेशन	**सिरचन** • कुशल कारीगर • स्वाभिमानी • काम के प्रति ईमानदार • खाने-पीने का शौकीन • संवेदनशील **वाचक** • व्यवहार-कुशल • संवेदनशील • श्रम के प्रति सम्मान • बहन से स्नेह	• कारीगरों के प्रति आदर • काम के प्रति ईमानदार • आत्मसम्मान • संवेदनशीलता और स्नेह	• ग्रामीण जीवन • सामंती समाज • गरीबी-समृद्धि • जातीय भेद-भाव	• संवाद-शैली • व्यंग्यात्मकता • भावानुकूलता • मार्मिकता	• खड़ी बोली हिंदी • देशज शब्दों का प्रयोग • मुहावरों का प्रयोग • व्यंग्यात्मकता • भावानुकूल भाषा • सरल-सहज भाषा	• प्रेम • आदर और सम्मान • सहिष्णुता • संवेदनशीलता • करुणा	• फणीश्वरनाथ रेणु • कथाकार, उपन्यासकार • ग्रामीण समाज का चित्रण • सामाजिक-राजनीतिक विषय वस्तु • प्रमुख कहानी संग्रह : एक आदिम रात्रि की महक, ठुमरी, अग्निखोर, अच्छे आदमी उपन्यास : मैला आँचल, जुलूस परती परिकथा • रिपोर्ताज और संस्मरण

15.4 सीखने के प्रतिफल

- अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय व्यक्त करते हैं।
- नई रचनाएँ पढ़कर उन पर साथियों से बातचीत करते हैं।

- साहित्य की विविध गद्य विधाओं में प्रयुक्त भाषा की बारीकियों पर चर्चा करते हैं; जैसे - विशिष्ट शब्द-वाक्य-शैली-संरचना।
- प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- हस्तकला, वास्तुकला, खेतीबाड़ी एवं अन्य व्यवसायों के प्रति अपना रुझान व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त होने वाली भाषा का प्रयोग करते हैं।
- भाषा-कौशलों के माध्यम से जीवन-कौशलों को आत्मसात करते हैं और अभिव्यक्त करते हैं।
- सामाजिक, शारीरिक एवं मानसिक रूप से चुनौती प्राप्त समूहों के प्रति संवेदनशीलता एवं समानुभूति लिखकर अभिव्यक्त करते हैं।

15.5 योग्यता विस्तार

लेखक परिचय : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

जन्म : 4 मार्च 1921, औराही हिंगना, अररिया, बिहार में हुआ था। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से पढ़ाई की। एक स्वतंत्रता-सेनानी के रूप में भी भूमिका निभाई।

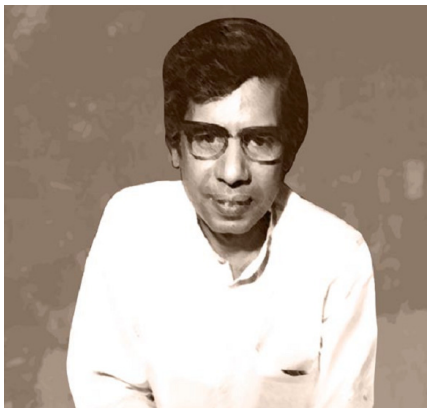

चित्र 15.3: फणीश्वरनाथ 'रेणु'

उन्होंने अनेक विधाओं में रचनाएँ कीं; जैसे–कहानी, उपन्यास, रिपोर्ताज, संस्मरण

कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं : उपन्यास – मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, दीर्घतपा, कितने चौराहे, पलटू बाबू रोड इत्यादि।

कहानी-संग्रह – एक आदिम रात्रि की महक, ठुमरी, अगिनखोर, अच्छे आदमी

संस्मरण – ऋणजल-धनजल, श्रुत अश्रुत पूर्वे, आत्म परिचय, वनतुलसी की गंध, समय की शिला पर।

रिपोर्ताज – नेपाली क्रांतिकथा

इनकी ग्रंथावली 'फणीश्वरनाथ रेणु ग्रंथावली' नाम से उपलब्ध है।

निधन : 11 अप्रैल, 1977

15.6 पाठांत प्रश्न

1. कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'ठेस' कहानी की समीक्षा कीजिए।
2. 'ठेस' कहानी के मूल उद्देश्य को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
3. 'सिरचन' के व्यक्तित्व की किन्हीं दो विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
4. 'तुम्हारी भाभी नाखून से खाँटकर तरकारी परोसती है।' इस कथन में छिपा व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।
5. 'ठेस' कहानी की भाषा विषय के अनुरूप है– सिद्ध कीजिए।
6. 'ठेस' कहानी की संवाद-योजना की किन्हीं तीन विशेषताएँ सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

15.7 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (क) 3. (ख)

पाठगत प्रश्न के उत्तर

15.1 1. (ग) 2. (घ) 3. (क)

15.2 1. (घ) 2. (क) 3. (क)

15.3 1. (घ) 2. (ख) 3. (ख)